IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि का सम्बन्ध–एक अध्ययन

डॉ. देवकी नन्दन शर्मा

सारांश– प्रस्तुत शोध लेख में पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है। आम तौर पर देखा जाता है कि पारिवारिक सम्बन्ध, मूलभूत सुविधाऐं व पारिवारिक प्रोत्साहन आदि कारण बालकों की अध्ययनशीलता को कई प्रकार से प्रभावित करते हैं। इसलिए शोधकर्ता द्वारा कई प्रकार के सम्बन्धित अध्ययनों का अवलोकन किया गया तथा प्रकाशित व अप्रकाशित ग्रन्थों का अध्ययन किया और अपने अनुभवों के आधार पर पाया कि परिवार का वातावरण, परिवार के व्यक्तियों का विद्यार्थी के प्रति व्यवहार उसके शैक्षिक विकास को प्रभावित करता है।

मुख्य शब्दावली – पारिवारिक वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना –

बालक बचपन में सबसे अधिक अपने माता–पिता के सम्पर्क में रहता है। माता–पिता ही बालक के भावी व्यक्तित्व के निर्माता होते हैं। बाल्यकाल का हर क्षण उनके सान्निध्य में व्यतीत होता है। माता–पिता का व्यक्तित्व, उनका सामाजिक व्यवहार, बातचीत का तरीका, पारस्परिक आचरण, रूचि सभी बालक के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालते हैं और यही बालक के आदर्श भी होते हैं। माता का सहयोग बालक के लिये एक दीपक का कार्य करता है जिसकी लौ से बालक का भविष्य प्रज्वलित होता है। जिन संस्कारों का उद्‌भव हम बालक में चाहते हैं वह माता–पिता द्वारा ही प्राप्त होते हैं।

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है। बाल्यकाल से ही माता–पिता बालक के कैरियर के प्रति चिन्तित होने लगते हैं। ऐसे में पारिवारिक वातावरण का भी बालक के शैक्षिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। परिवार अपने आप में एक अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र है जिसमें बालक समाज में निर्दिष्ट मूल्यों, आचरणों एवं व्यवहारों का अवलोकन करता है तथा माता–पिता और विद्यालय उसका घर होता है जो जीवन पर्यन्त बालक का प्रदर्शन करते हुए उसे प्रगति की ओर ले जाता है। परिवार में शिक्षा एवं प्रशिक्षण के साथ–साथ अनुदेशन की प्रक्रिया भी चलती है। अतः परिवार के सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक वातावरण का बालक के मन पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

माता–पिता में मधुर सम्बन्ध न होने पर बालक में अच्छे गुणों का विकास नहीं होता है । इस तरह का सम्बन्ध बालक के मानसिक विकास को अधिक प्रभावित करता है जिसके कारण वह अपने अन्दर आत्मविश्वास उत्पन्न नहीं कर पाता है और शैक्षिक रूप से वह पिछड़ जाता है। अतः पारिवारिक सम्बन्ध, मूलभूत सुविधाऐं व पारिवारिक प्रोत्साहन आदि कारण बालकों की अध्ययनशीलता को कई प्रकार से प्रभावित करते हैं।

अभिवावक जिस छवि को बालक के अन्तःकरण में स्थापित करते हैं बालक भविष्य में वही बनने की कोशिश करता है। इस कार्य में शिक्षक व्यवहार बालक की रूचि, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर का पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। यदि ये सभी कारक सकारात्मक हों तो बालक की शैक्षिक उपलब्धि उच्च हो सकती है। जब बालक अध्ययन करते हैं तो उन्हें अभिप्रेरणा, प्रोत्साहन व पुनर्बलन मिलना चाहिए क्योंकि इसका शैक्षिक गतिविधियों की प्रकृति एवं व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है।

गृह वातावरण बालक के प्रारम्भिक शिक्षा का आधार बनता है जिसमें बालक अपने अभिभावक एवं परिवार के अन्य सदस्यों में अपना व्यवहार निर्धारित करता है पारिवारिक वातावरण स्वस्थ होने पर बालक का सर्वागीण विकास उचित ढंग से होता है। देखा जाता है कि अधिकांश परिवारों का वातावरण स्वस्थ नहीं रहता। माता–पिता छोटी–सी बात को लेकर झगड़ते रहते हैं। परिवार के लोगों का रहन–सहन उनकी आदतें, अभिवृत्तियाँ, आकांक्षाएँ आदि बालक के शैक्षिक विकास को काफी हद तक प्रभावित करते हैं। यदि ये सभी कारक सकारात्मक हों तो बालक के व्यवहार को सकारात्मक बनाया जा सकता है। सकारात्मक सोच बालक के शैक्षिक विकास को काफी प्रभावित करती है।

परिवार बालक का अनौपचारिक विद्यालय है जिसमें बालक अपनी शिक्षा का आधार तैयार करता है। इसके लिये अभिभावक ही बालक की अन्तर्निहित योग्यताओं को पहचान कर उसे प्रोत्साहित करते हैं। बालक केवल सीमित समय के लिये विद्यालय से जुड़ा रहता है उसका अधिकांश समय अपने पारिवारिक वातावरण में व्यतीत होता है। ऐसी स्थिति में न केवल बालक की शिक्षा अपितु उसके अन्य क्षेत्रों का विकास भी प्रभावित होना स्वाभाविक है।

डॉ. वेणी प्रसाद के अनुसार :– ''परिवार व्यक्ति से भी अधिक प्राचीन है। व्यक्ति का जन्म परिवार में होता है उसका पालन पोषण भी परिवार में होता है यही उसे सामाजिकता का पाठ भी पढ़ाता है। यह समाज की सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक इकाई है। यह मानव जाति की आदिम संस्था है।''

वील्स तथा स्टोर के अनुसार :– जिस परिवार में स्नेह सहयोग तथा प्रजातंत्र की भावना पायी जाती है। उस परिवार के बालक की शैक्षिक उपलब्धि उच्च स्तर की होती है तथा बालक बड़ी सरलता से वातावरण में समायोजन स्थापित कर लेते हैं। इसके विपरीत स्थिति में बालक बाह्य वातावरण से समायोजन स्थापित करने में असमर्थता प्रकट करते हैं एवं कठिनाई का अनुभव करते हैं।

मनुष्य व्यक्तिगत विशेषताएँ पारिवारिक अनुभवों से ही प्राप्त करता है। किसी भी व्यक्ति में विशिष्ट गुणों का विकास उसके पारिवारिक पर्यावरण के अनुभवों पर ही निर्भर करता है। बालक के जीवन के प्रारम्भिक पारिवारिक अनुभवों का प्रभाव उसके सम्पूर्ण जीवन के विभिन्न पक्षों पर विशेष रूप से पड़ता है। इस सम्बन्ध में रेनवार महोदय का कहना है कि – बालक के पर्यावरण में रहने वाले महत्वपूर्ण व्यक्ति विशेष के प्रारम्भ में माता–पिता बाद में परिवार के अन्य सदस्यों तथा बालक के मध्य होने वाले परस्पर व्यवहार से व्यक्तित्व बनता है।

माता–पिता की अभिवृत्तियों का बालक की उपलब्धि पर प्रभाव –सायमण्डस (1936) ने माता–पिता द्वारा स्वीकृत तथा अस्वीकृत बालकों का अध्ययन किया और अपनी रिपोर्ट में यह बताया कि स्वीकृत बालकों का व्यवहार अस्वीकृत बालकों की अपेक्षा अधिक सामाजिक, मैत्रीपूर्ण, विश्वासपात्र, लोकप्रिय तथा प्रसन्नचित तथा उत्तम शैक्षिक उपलब्धि वाला होता है । ये प्रत्येक कार्य में रूचि रखने वाले तथा यथार्थता से सम्बन्ध रखते हैं तथा आत्म –प्रदर्शन की अभिवृत्ति का शोधन रचनात्मक तथा अन्य अनेक उपयोगी सामाजिक कार्यों द्वारा कर लेते हैं जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास पूर्णतः हो जाता है। इसके विपरीत अस्वीकृत बालकों में असुरक्षा तथा आत्म हीनता की भावना पायी जाती हैं वे माता–पिता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अनेक प्रकार के व्यवहार करते हैं जैसे चुप रहना, तनिक सी बात पर रूठ जाना, क्रोधित होना, भोजन नहीं करना, बिस्तर पर ही मल–मूत्र त्याग देना आदि।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बालक के बौद्धिक स्तर व्यक्तित्व विकास तथा उनकी योग्यताओं पर माता–पिता की अभिवृत्तियों का अवश्य ही प्रभाव पड़ता है। अभिवृत्तियों का प्रभाव बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर भी पड़ता है। बालक विद्यालय में पढ़ता है पढ़ने के उपरान्त उत्तीर्ण–अनुत्तीर्ण होने का माता–पिता पर भी प्रभाव पड़ता है। इस प्रभाव से बालक प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है साथ ही साथ परिवार के आकार प्रकृति आदि का प्रभाव भी बालक की शिक्षा पर पड़ता है एवं पढ़ने की योग्यता पर भी बालक परिवार में स्थिति का प्रभाव पड़ता है।

उच्च शिक्षा प्राप्त माता–पिता की आकांक्षाएँ अपने बालकों के प्रति अत्यधिक उच्च होती है। अशिक्षित माता–पिता के बालकों की निष्पत्ति अच्छी नहीं होती है। इसी प्रकार घर में यदि सांस्कृतिक वातावरण अच्छा नहीं है तो विद्यालय में बालक की अभिव्यक्ति ठीक प्रकार की नहीं हो सकती है।

भारतीय संस्कृति की गतिशीलता ने परिवार के प्रतिमानों में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। अब परिवार का आकार दिन–प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है। व्यावसायिक गतिशीलता अब अधिक होने के कारण परिवार की संरचना बदल रही है। बालकों की शिक्षा की ओर माता–पिता ध्यान अवश्य देते हैं परन्तु उनमें निराशा इस बात की अधिक रहती है कि क्या पढ़ने लिखने के बाद बच्चों को कोई कार्य मिल सकेगा।

वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है। बाल्यकाल से ही माता–पिता बालक के कैरियर के प्रति चिन्तित होने लगते है। ऐसे में पारिवारिक वातावरण का भी बालक के शैक्षिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। अधोलिखित प्रकार का पारिवारिक वातावरण बालक को शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव डालता है।

1. जिन बच्चों को माता–पिता का अत्यधिक लाड़–प्यार मिलता है वे बच्चे अपना शैक्षिक विकास ठीक प्रकार से नहीं कर पाते एवं अपनी हर जरूरत के लिए माता–पिता पर आश्रित होते हैं।
2. इसी प्रकार अत्यधिक छूट मिलने पर भी बच्चे अपने मार्ग से भटक जाते है वे शिक्षा के प्रति लापरवाह हो जाते हैं।
3. कभी–कभी माता–पिता बच्चों से अधिक अपेक्षाएँ रखने लगते हैं जिससे बच्चे मानसिक दबाब महसूस करते हैं और उनका शैक्षिक विकास अवरूद्ध हो जाता है।
4. परिवार में कलह का वातावरण होने से भी बच्चे का शैक्षिक विकास प्रभावित होता है।
5. बच्चों पर अत्यधिक पाबन्दियाँ रखने रोक–टोक करने पर भी बच्चों का मानसिक विकास प्रभावित होता है।
6. विद्यार्थियों की उत्तम शैक्षिक उपलब्धि के लिए आवश्यक है कि उन्हें सन्तुलित वातावरण मिले। माता–पिता बच्चों की क्षमताओं को समझें उन्हें अपना विकास करने का पूर्ण अवसर दें तथा उन पर किसी भी प्रकार मानसिक दबाब न डालें व अत्यधिक अपेक्षाएँ न करें।

अतः निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि परिवार का वातावरण, परिवार के व्यक्तियों का विद्यार्थी के प्रति व्यवहार उसके शैक्षिक विकास को प्रभावित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, प्रोफेसर एस.पी. एवं गुप्ता डॉ. अल्का – उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद
2. सिंह, डॉ. अरूण कुमार– शिक्षा मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी
3. लाल, आर एवं जैन – शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारम्भिक सांख्यिकी लॉयल बुक डिपो, मेरठ
4. वार्षिक रिपोर्ट, डी.पी.ई.पी 2012–2013–राजस्थान प्राथमिक शिक्षा परिषद जयपुर
5. ऑबेरॉय डॉ.एस.सी – शिक्षा मनोविज्ञान, आर्य बुक डिपो, करोलबाग नई दिल्ली
6. बत्रा दीनानाथ – शिक्षा का भारतीयकरण

7- Sharma, R. (1998), Universal Elementry Education: The Question of How Economic and Political Weekly. Vol.33 (26).

8- Shukla S. (1994), Attainment of Primary School children in India, NCERT, New Delhi.